महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र

चौकमाफी पीपीगंज गोरखपुर उत्तर प्रदेश २७३१६५

Mahayogi Gorakhnath Krishi Vigyan Kendra

Chaukmafi (Peppeganj), Jangal Kaudiya Gorakhpur, U.P-273165

Website : http://www.mgkvk.in Email: gorakhpurkvk2@gmail.com

टिड्डियों के हमले की आशंकाओं ने उड़ाई किसानों की नींद; कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा अलर्ट जारी

डॉ. आर. पी. सिंह

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष

कोरोना विषाणु से चल रही जंग के बीच पाकिस्तान की तरफ से चल पड़े टिड्डी के दलों ने किसान भाइयों की रातों की नींद उड़ा दी है। टिड्डी क्या होते हैं एवं

कैसे क्षति पहुंचाते हैं ? टिड्डी छोटे पंखों वाले घास हापर होते हैं, टिड्डियों को उनके चमकीले पीले रंग (45-50 मेमी.)और पिछले लंबे पैरों से उन्हें पहचाना जा सकता है। टिड्डी जब अकेली होती है तो उतनी खतरनाक नहीं होती है। लेकिन उत्पाती भीड़ बनाकर हवा की दिशा में एक दिन में 100-150 किमी. की दूरी तय कर लेते हैं। ये टिड्डी दल सूर्यास्त के समय किसी न किसी पेड़-पौधों पर आश्रय लेकर समस्त वनास्पतियों को चट कर जाते हैं। इस कीट का जीवन-चक्र की तीन अवस्थाएं होती हैं:- 1. अंडा, 2. शिशु टिड्डी, 3. वयस्क टिड्डी। एक मादा टिड्डी भूमि में 500-1500 अंडे देती है, इन अण्डों से 30° सेंटीग्रेट से ऊपर तापक्रम होने पर शिशु टिड्डी विभिन्न अवस्थाओं से गुजरते हुए 5 हफ्तों में तैयार होती है उसके बाद व्यस्क टिड्डी बनाने में 2-3 सप्ताह का समय लगता है। झुंड में रहने पर इनका रवैया बेहद आक्रामक हो जाता है। फसलों को एकबारगी सफाया कर देती हैं। आपको दूर से ऐसा लगेगा, मानो आपकी फसलों [illegible] ने एक बड़ी-सी [illegible] कर दिया हो। कुछ समय पहले अफ्रीकी देशों में इन्होंने फसलों को काफी नुकसान पहुंचाया है। हैरानी की बात यह है कि टिड्डी [illegible], बीज, [illegible] की छाल और अंकुर सब कुछ खा जाती है। हर एक टिड्डी अपने वजन के बराबर खाना खाती है। इस तरह से एक टिड्डी दल, 2500 से 5000 लोगों का [illegible]

टिड्डी दल के नियंत्रण के उपाय:

- यदि टिड्डी दल खेतों के आस-पास दिखाई दें तो भगाने के लिए [illegible] माउटस्पीकर या दूसरी चीजों के माध्यम से शोरगुल [illegible] उड़ाते रहें, टिड्डियों को अपनी उड़ान भरने के लिए एनर्जी की जरूरत होती है जो उन्हें फसल खाने से मिलती है. किसान [illegible] को बैठने ही नहीं देंगे तो उन्हें खुराक नहीं मिल पाएंगी और वो आगे भी ज्यादा उड़ान नहीं भर पाएंगी.
- रात के समय टिड्डियां जहां भी पेड़ों की पत्तियों पर बैठ जाती है उसकी खबर भारत सरकार की सोकस्ट टीम तक पहुंचाई जाती है। जिससे सुबह के समय टिड्डियों के ऊपर दवा का छिड़काव कर नियंत्रण किया जा सके।
- टिड्डी दल यदि आकाश में उड़ते हुए दिखाई दें तो खेतों के आस-पास धुआं करें।
- टिड्डियों ने जिस स्थान पर अपने अंडे दिये हों, वहां पर मैलाथियोन 5% का या क्विनालफॉस 1.5% धूल की 25 किग्रा.मात्रा प्रति [illegible]

ge nymph

- टिड्डियों का प्रकोप होने पर फेनीट्रोथीयोन 40% डब्लू.पी. ½ किग्रा. मात्रा को 100 किग्रा. धान की भूसी के साथ 5 किग्रा.गुड़ मिलाकर जहरीला चारा तैयार करके खेतों में प्रयोग करें।
- टिड्डियों के नियंत्रण के लिए नीम तेल 4-5 मी. को 1000 मी. पानी में मिलाये तथा उसमें 1% के साबुन का घोल मे मिलाकर छिड़काव करें।
- यदि टिड्डियों का नियंत्रण आसानी से नहीं हो पा रहा हो तो बेन्थियोकार्ब 80% डब्लू.पी 150 ग्राम मात्रा 500 मी. पानी में या लैम्बासाईहलोथ्रिन 5% ई.सी. की 400 मिली. 500 मी. पानी में घोलकर छिड़काव करें एवं जनपद स्तर के अधिकारियों के तत्काल सूचित करें जिससे प्रभावकारी नियंत्रण किया जा सके।

Scanned with CamScanner